नईदुनिया

संपादकीय

बेकाबू होती जा रही महंगाई

महंगाई गंभीर समस्या बनती जा रही है और बाजार में उतार-चढ़ाव के तौर पर देखी जाने वाली स्थितियां अब आम रहने लगी हैं। एक दौर था, जब लोग कुछ समय तक महंगाई की चुनौतियों का सामना कर लेते थे। अब महंगाई में निरंतरता बनी हुई है, खर्च की चादर फैलती जा रही है। ठंड के मौसम में हरी सब्जियां बाजार में दिखती हैं और अमूमन उनकी कीमत ऐसी रहती है कि लोग खर्च कर सकें, लेकिन इस साल ऐसा नहीं है। गोभी, पालक, भिंडी, टमाटर, प्याज, लहसुन, मटर जैसी सब्जियों के दाम ज्यादा होने से आम लोगों का बजट प्रभावित हो रहा है।

सब्जी विक्रेताओं के मुताबिक, बड़े कारोबारियों की जमाखोरी के कारण महंगाई की नौबत आई है। विवाह आयोजनों के लिए खरीद हो रही है और छोटे विक्रेताओं तक आवक कम हो रही है। इस बार हरी सब्जियों की पैदावार भी कम हुई है। हकीकत यह है कि पिछले कुछ वर्षों से रोजी-रोजगार की फिक्र में लोग यह भी भूलते जा रहे हैं कि उनकी थाली में न्यूनतम चीजें क्या-क्या होनी चाहिए। यह नौबत आ गई है कि अर्थव्यवस्था के चमकते आंकड़ों की चकाचौंध के बीच बहुत सारे लोगों को खाने-पीने की चीजों में भी कटौती करनी पड़ रही है। यह सोचने की जरूरत है कि आर्थिक विकास के दावों के दायरे में कौन है। क्यों थाली महंगी हो रही है। जरूरी सामानों के साथ ही खाद्य पदार्थों की बढ़ी हुई कीमतों ने पहले ही आम लोगों की रोजमर्रा की जरूरतों को प्रभावित करना शुरू कर दिया था। मुश्किल सिर्फ सब्जियों तक नहीं सिमटी है। इसका असर दूसरे खाद्य पदार्थों पर भी पड़ा है और खरीदारी के वक्त भी लोगों को अब थोड़ा रुक कर सोचना पड़ रहा है।

यह दुखद स्थिति है कि आर्थिक महाशक्ति बनने की ओर कदम बढ़ाने का दावा करने के क्रम में इस पक्ष की अनदेखी की जा रही है कि लोग जीने के लिए जो भोजन कर रहे हैं, उसके लिए उन्हें कितना सोचना पड़ रहा है। देश की गरीब आबादी के सामने किस तरह की चुनौतियां खड़ी हैं, यह समझना बहुत मुश्किल नहीं है। रुपए की कीमत लगातार कम होते जाने की वजह से भी महंगाई पर काबू पाने में मुश्किलें आ रही हैं। महंगाई की हकीकत और सरकारी आंकड़ों में विरोधाभास दिख रहा है। दो दिन पहले सरकार का आंकड़ा सामने आया कि महंगाई दर में गिरावट हुई है और दावा किया गया कि खुदरा बाजार में स्थिति संभलने लगी है, लेकिन हकीकत कुछ और है। दरअसल, खुदरा बाजार का तंत्र जरूरी नहीं कि थोक बाजार से ही नियंत्रित हो या उसके जरिए ही संचालित हो। एक बड़ी वजह यह है कि आयात और निर्यात नीति पर संतुलित तरीके से ध्यान नहीं दिया जाता।

हाल में आयात और निर्यात के जो आंकड़े सामने आए हैं, उनसे यह स्पष्ट है। व्यापार घाटा बढ़ा है। इससे महंगाई बढ़ती ही है। महंगाई पर काबू पाने के लिए वस्तुओं के विपणन, भंडारण और आयात पर तर्कसंगत नजरिए से काम होना चाहिए। इसमें दो राय नहीं कि केंद्रीय बैंक व सरकार के प्रयासों के बावजूद खुदरा महंगाई पर नियंत्रण के लक्ष्य हासिल नहीं हो सके हैं। तमाम उपायों के बावजूद बिचौलियों पर काबू नहीं पाया जा सका है। नीतिगत स्तर पर इसके लिए ठोस उपाय करने होंगे।

सशक्त भारत के लिए सुशासन की आवश्यकता

गिरीश्वर मिश्र

स्वतंत्रता पाने के तीन चौथाई सदी बीतने के बाद आज भारत संभावनाओं का एक आकर्षक परिदृश्य प्रस्तुत करता है, जो अपनी अनूठी चुनौतियों और अपार अवसरों दोनों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करता है। आज 140 करोड़ से अधिक की आबादी के साथ, भारत अपने इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा है। आगे के समय में भारत की आर्थिक प्रगति वर्तमान सुधारों, तकनीकी प्रगति और जनसांख्यिकीय बदलावों से काफी प्रभावित होगी। ऐसा अनुमान है कि 2025 तक भारत अमेरिका और चीन के बाद दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा, जो मुख्यत: एक बड़े आकार वाले , युवा कार्यबल, बढ़ते मध्यम वर्ग और घरेलू खपत से प्रेरित है।

यहाँ यह ध्यान रखने की बात है कि भारत केवल विकास नहीं बल्कि समावेशी विकास चाहता है जो लाखों लोगों को गरीबी और असमानता से मुक्ति दिला सके। डिजिटल इंडिया जैसी पहलों और फिनटेक के संतोषदायी अनुभव से प्रोत्साहित होकर भारत का डिजिटल अर्थव्यवस्था में परिवर्तन, नए रोजगार के अवसर पैदा कर सकता है और नवाचार को बढ़ावा दे सकता है। देश डिजिटल साक्षरता, बुनियादी ढांचे और उद्यमिता पर ध्यान केंद्रित करके तकनीकी सेवाओं, ई-व्यापार, कृत्रिम मेधा और डेटा विज्ञान में वैश्विक नेता बनने का लक्ष्य बना रहा है। उभरती प्रवृत्तियों को देखते हुए यह लग रहा है कि मेक इन इंडिया पहल के तहत अपने विनिर्माण क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए भारत का प्रयास आत्मनिर्भरता और रोजगार सृजन हासिल करने के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। बदलते परिवेश में, भारत विशेष रूप से इलेक्ट्रॉनिक्स, मोटर गाड़ी (ऑटोमोटिव) और औषधीय (फार्मास्युटिकल) क्षेत्रों में एक वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में उभर सकता है। दरअसल औद्योगिकीकरण और स्थिरता के बीच संतुलन बनाने की हमारी क्षमता ही आर्थिक मामलों में हमारी प्रगति को निश्चित करेगी। देश का लक्ष्य अक्षय ऊर्जा, विशेष रूप से सौर ऊर्जा के क्षेत्र में वैश्विक नेता बनना है, क्योंकि यह हरित प्रौद्योगिकियों और टिकाऊ व्यवस्थाओं के अनुकूल है।

आज भारत कृत्रिम बुद्धि (एआई) और डेटा एनालिटिक्स से लेकर अंतरिक्ष अन्वेषण तक कई तकनीकी क्रांतियों में अग्रणी रहने की स्थिति में है। भारत का तकनीकी पारिस्थितिकी तंत्र तेजी से बढ़ रहा है और 2025 तक देश एआई, मशीन लर्निंग और ऑटोमेशन तकनीकों का प्रमुख केंद्र बन सकता है। इससे कृषि और स्वास्थ्य सेवा से लेकर शहरी नियोजन और शिक्षा आदि को लाभ पहुँचेगा। भारत की अंतरिक्ष एजेंसी इसरो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा पा रही है। मिशन चंद्रयान, गगनयान (मानव मिशन) और संभावित चंद्र और मंगल मिशन भारत को वैश्विक अंतरिक्ष अन्वेषण के क्षेत्र में अग्रणी बना सकते हैं। भारत का स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र तेजी से आगे बढ़ रहा है और यह उत्तरी अमेरिका के अलावा किसी भी अन्य देश की तुलना में अधिक यूनिकॉर्न (1 बिलियन डॉलर से अधिक मूल्य की कंपनियां) पैदा करने वाला देश हो सकता है। यह भारत को वैश्विक स्तर पर एक प्रमुख नवाचार केंद्र के रूप में स्थापित करने में सहायक है।

परंतु देश की प्रगति सिर्फ़ आर्थिक विकास पर ही निर्भर नहीं है, उसके लिए सामाजिक समावेशन, शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और लैंगिक समानता भी ज़रूरी है। भारत ने अपनी शिक्षा प्रणाली को बेहतर बनाने के लिए महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किए हैं, जिससे यह अधिक समावेशी और सुलभ बन सके। कक्षाओं में प्रौद्योगिकी का अधिक एकीकरण हो सकता है, शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हो सकता है और कौशल विकास पर ध्यान केंद्रित किया जा सकता है। उच्च शिक्षा और अनुसंधान पर भारत का जोर विश्वस्तरीय संस्थानों का निर्माण कर सकता है जो वैश्विक छात्रों को आकर्षित कर सकते हैं। इसी तरह टेलीमेडिसिन, निदान (डायग्नोस्टिक्स) और स्वास्थ्य के बुनियादी ढांचे में प्रगति के साथ भारत की स्वास्थ्य सेवा प्रणाली की सुलभता और कुशलता प्रभावी हो सकती है। सरकार की आयुष्मान भारत योजना (गरीबों के लिए एक बड़ी स्वास्थ्य बीमा योजना) स्वास्थ्य सेवा असमानताओं को कम कर सकती है, और नई चिकित्सा प्रौद्योगिकियों का विकास स्वास्थ्य सेवा उपायों के मामले में बदलाव ला सकता है।

लैंगिक समानता और सशक्तिकरण को बढ़ाने के लिए अभियान चल रहा है जिसके अच्छे परिणाम मिल सकते हैं। आशा करते हैं कि भारत में कार्यबल, राजनीति और नेतृत्व के पदों पर महिलाओं की प्रतिभागिता बढ़ेगी। शिक्षा, सुरक्षा और समान अधिकारों के लिए प्रयास निश्चित रूप से एक अधिक समावेशी समाज के निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण साबित होंगे। गरीबी और असमानता को कम करना भारत की प्राथमिकता बनी रहेगी। आवास, पानी, स्वच्छता और बिजली जैसी बुनियादी सेवाओं तक पहुँच का विस्तार करके वंचितों के जीवन की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार लाया जा सकता है, जिससे लाखों लोग गरीबी से बाहर आ सकेंगे। पर्यावरणीय स्थिरता और जलवायु विषयक कार्रवाई आर्थिक विकास और जीवन की गुणवत्ता दोनों के लिए महत्वपूर्ण साबित होगा। भारत का लक्ष्य सौर, पवन और जलविद्युत ऊर्जा उत्पादन के महत्वाकांक्षी लक्ष्यों के साथ नवीकरणीय ऊर्जा में वैश्विक नेतृत्व देना है। देश अपनी ऊर्जा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा नवीकरणीय स्रोतों से उत्पन्न कर सकता है, जिससे उसका कार्बन फुटप्रिंट और जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम हो जाएगी।

आज भारत जल की कमी की गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है, और जल संरक्षण, पुनर्चक्रण और प्रबंधन पर विशेष ध्यान देना होगा। कुशल सिंचाई और जल वितरण के लिए प्रौद्योगिकी, साथ ही बेहतर नीतियों से इन चुनौतियों का समाधान करने में मदद मिल सकती है। भारत में जैव विविधता बहुत समृद्ध है और वन्यजीवों, वनों और पारिस्थितिकी तंत्रों की सुरक्षा के लिए प्रयास बढ़ाने होंगे । राष्ट्रीय उद्यानों, संरक्षित क्षेत्रों और टिकाऊ कृषि पद्धतियों के विस्तार से पर्यावरण की सुरक्षा में मदद मिल सकती है। बदलते भू-राजनीतिक माहौल में वैश्विक मामलों में भारत की प्रमुख भूमिका होगी तथा एशिया में अपनी रणनीतिक स्थिति का लाभ मिल सकता है। भारत का कूटनीतिक प्रभाव बढ़ता रहेगा, खासकर इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में। क्वाड (अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ) के सदस्य के रूप में, भारत खुद को चीन की बढ़ती ताकत के लिए एक प्रमुख प्रतिसंतुलन के रूप में स्थापित कर रहा है। सांस्कृतिक कूटनीति, मीडिया और बॉलीवुड के माध्यम से देश की बढ़ती सॉफ्ट पावर इसकी वैश्विक स्थिति को और मजबूत कर सकती है।

उन्नत प्रौद्योगिकी , स्वदेशी रक्षा उत्पादन में वृद्धि और वैश्विक सहयोगियों के साथ बढ़े हुए सहयोग द्वारा भारत की रक्षा क्षमताएँ सुदृढ़ हो सकेंगी। भारत शांति अभियानों और संघर्ष समाधान में, विशेष रूप से अपने पड़ोस और अफ्रीका में, केंद्रीय भूमिका निभाना जारी रखेगा। वैश्विक व्यापार और निवेश को बढ़ाने की भारत की आकांक्षा से देश को बेहतर बुनियादी ढांचे, बंदरगाह सुविधाओं और अधिक प्रतिस्पर्धी कारोबारी माहौल के साथ एशिया के लिए एक व्यापार केंद्र के रूप में अपनी स्थिति मजबूत करने में मदद मिलेगी।

भारत की जनसंख्या बढ़ती रहेगी, लेकिन इसमें महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय परिवर्तन भी होंगे । भारत में शहरी आबादी बढ़ने की उम्मीद है, मुंबई, दिल्ली, बैंगलोर और हैदराबाद जैसे शहर आर्थिक और नवाचार केंद्रों के रूप में विकसित होते रहेंगे। हमें टिकाऊ, लचीले और तकनीकी रूप से उन्नत शहरों के निर्माण पर बल देना होगा जो बेहतर जीवन स्तर प्रदान करते हैं। भारत का जनसांख्यिकीय लाभांश – इसका बड़ा, युवा कार्यबल – देश के विकास के लिए एक निश्चित रूप से एक महत्वपूर्ण कारक है। शिक्षा, कौशल विकास और उद्यमिता के माध्यम से युवा सशक्तिकरण इस क्षमता का दोहन करने के लिए महत्वपूर्ण होगा।

हम अभिनव वर्ष के अवसर पर आप सबके प्रति शुभकामना करते हैं

आचार्य पं. पृथ्वीनाथ पाण्डेय

हम यहाँ आप सबको अभिनव शब्द के अर्थ और उसके प्रयोग के औचित्य को उत्पत्ति-सहित समझायेंगे। इसके अतिरिक्त नव, नया, नवल, नवीन, नूतन इत्यादिक शब्दों पर भी प्रकाश डालेंगे। आपको चाहिए कि अभिनव का मूल शब्द नव है, जिसके पूर्व में अभि उपसर्ग प्रयुक्त है। यहाँ इस अभि उपसर्ग का अर्थ किसी प्रकार की विशेषता अथवा श्रेष्ठता का सूचक है। इसप्रकार अभिनव का अर्थ हुआ- श्रेष्ठ नया। श्रेष्ठ सर्वोत्तम-अवस्था/सर्वोत्तमावस्था का शब्द है।

नववर्ष का मौका है और हम एक-दूसरे को नये साल की बधाई और शुभकामनाएं देने के लिए अलग-अलग तरह के वाक्यों का प्रयोग करते हैं, जैसे- नव/नये वर्ष में आप सबका स्वागत है या नववर्ष की शुभ कामनाएं या फिर नूतन वर्ष की शुभ कामनाएँ देता हूँ; परन्तु इनमें से कोई वाक्य शुद्ध नहीं है। आप प्रश्न कर सकते हैं- ऐसा क्यों? हम यहाँ एक-एक गुत्थी सुलझाते हुए, आप सबको शुद्ध और उपयुक्त प्रयोग से अवगत करायेंगे। हमने शीर्षक में नव एवं नये वर्ष के स्थान पर अभिनव वर्ष का प्रयोग किया है, जो हमारे पाठिका-पाठकवर्ग को थोड़ा-बहुत चौंका सकता है; परन्तु जब कोई व्याकरणवेत्ता एवं भाषाविज्ञानी कुछ अलग हटकर प्रयोग करता है तब उसे ग्रहण करने की क्षमता विकसित करनी चाहिए; क्योंकि वह आपकी शब्द-सामर्थ्य में वृद्धि करता जान पड़ता है।

हम यहाँ आप सबको अभिनव शब्द के अर्थ और उसके प्रयोग के औचित्य को उत्पत्ति-सहित समझायेंगे। इसके अतिरिक्त नव, नया, नवल, नवीन, नूतन इत्यादिक शब्दों पर भी प्रकाश डालेंगे। आपको चाहिए कि अभिनव का मूल शब्द नव है, जिसके पूर्व में अभि उपसर्ग प्रयुक्त है। यहाँ इस अभि उपसर्ग का अर्थ किसी प्रकार की विशेषता अथवा श्रेष्ठता का सूचक है। इसप्रकार अभिनव का अर्थ हुआ- श्रेष्ठ नया। श्रेष्ठ सर्वोत्तम-अवस्था/सर्वोत्तमावस्था का शब्द है। जो भी विद्यार्थी और अध्यापक सर्वश्रेष्ठ का प्रयोग करते हैं, उनका यह प्रयोग अशुद्ध कहलायेगा; क्योंकि सामान्यावस्था के शब्द श्रेष्ठ के रूप हैं- श्रेष्ठ-श्रेष्ठतर-श्रेष्ठतम। यहाँ श्रेष्ठ नया का अर्थ है, सर्वथा नया। अब अभिनव की उत्पत्ति को समझें। यह संस्कृत-भाषा का शब्द है। जैसा कि हम बता चुके हैं कि इसके मूल शब्द मे अभि उपसर्ग युक्त है। स्तुति करना के अर्थ में यह नु धातु का शब्द है, जिसके अन्त मे अप् प्रत्यय जुड़ा हुआ है। इस प्रकार अभिनव शब्द की उत्पत्ति होती है। यह शब्दभेद के विचार से विशेषण का शब्द है और लिंगभेद की दृष्टि से पुंल्लिंग-शब्द। अभिनव के समानार्थी शब्द हैं- नया, नव, नवीन, नव्य तथा नूतन इत्यादिक, जिनमें तात्त्विक अन्तर होता है। इसका शुद्ध और उपयुक्त वाक्य-प्रयोग है- हमारे पाठिका-पाठकवर्ग का अभिनव वर्ष में स्वागत है। अब आप सोच रहे होंगे कि संज्ञा-शब्द वर्ष के साथ विशेषण-शब्द अभिनव का प्रयोग क्यों, तो जान लें कि हम यदि यहाँ नव वर्ष/ नूतन वर्ष / नया वर्ष का व्यवहार करते हैं तो वह अभिनव की तुलना में उतना प्रभावक प्रयोग नहीं दिखेगा; क्योंकि वर्ष 2025 या अन्य कोई वर्ष न कभी आया था और न ही आयेगा।

पहले यह जान लें कि अभिनव ऐसा शब्द है, जिसके प्रयोग को लेकर भ्रम और संशय बना रहता है, इसलिए कि इसका समध्वनिमूलक/समोच्चारित शब्द अभिनय है; परन्तु अर्थ मे भिन्नता रहती है। यही कारण है कि जब किसी पाण्डुलिपि की टंकित प्रति संशोधकों को पढ़ने के लिए दी जाती है तब अधिकतर संशोधक अभिनव शब्द से परिचित न होने के कारण अभिनव के अन्त में प्रयुक्त अक्षर व के स्थान पर य कर देते हैं, जिससे कि अनर्थ हो जाता है। अभिनव को नितान्त/सर्वथा (बिलकुल) नया कहा जाता है। इसका एक अन्य अर्थ भी है; और वह है, आधुनिक युग की विशेषताओं से युक्त। जैसे- वर्ष 2025 एक अभिनव वर्ष है। अभिनव की परिभाषा है- जो आधुनिक युग की विशेषताओं से युक्त हो, उसे अभिनव कहते हैं। आधुनिक युग वह है, जिस वर्तमान को व्यक्ति जी रहा होता है। वह अतीत हो जाने के बाद भविष्य में प्रकट नहीं होता।

अब समध्वनिमूलक शब्द अभिनय का बोध करें। इस शब्द मे भी अभि उपसर्ग है; किन्तु यहाँ धातु मे बदलाव दिखता है। इस शब्द मे ले जाने के अर्थ में नी धातु का प्रयोग दिखता है, जिसमे अच् प्रत्यय जुड़ा हुआ है। अभिनय को नाटक का खेल कहा जाता है। जब किसी के भाषण वा चेष्टा को कुछ अवधि के लिए धारण किया जाता है तब उसे अभिनय कहते हैं। अभिनय के भिन्नार्थी शब्द हैं- नक़ूल (शुद्ध शब्द नक़ूल है, जो कि अरबी-भाषा का शब्द है।); स्वाँग; खेल आदिक।

अभिनय का अर्थ है- नाटक इत्यादिक में कलात्मक ढंग से हाव-भाव का प्रदर्शन।

हमें आशा है कि आप सब अब नया वर्ष के संदर्भ में अभिनव का ही व्यवहार करेंगे।

हम अब आपको इससे सम्बन्धित पर्यायवाची शब्द कहलाने वाले शब्दों की कारण सहित जानकारी देंगे।

आप अब अर्वाचीन शब्द को समझें। यह संस्कृत-भाषा से उत्पन्न शब्द है। अर्वाचीन का मूल शब्द अर्वाच् है, जिसमें ख और ईन का योग है। इस प्रकार अर्वाचीन नामक विशेषण-शब्द की उत्पत्ति होती है। इसका शाब्दिक अर्थ है, जो वर्तमान समय मे बना वा निर्मित हुआ हो। जैसे- अर्वाचीन साहित्य, अर्वाचीन चिकित्सा-पद्धति।

आप सबकी उत्सुकता और जिज्ञासा नया शब्द को समझने की होगी, तो यह जान-समझ लें कि नया हिन्दी-भाषा का शब्द है, जो कि शब्दभेद के विचार से विशेषण का शब्द और लिंग-दृष्टि से पुंल्लिंग का। इसके समानार्थी शब्द हैं- नवीन, नूतन, हाल का, ताज़ा इत्यादिक। यह पुराना के साथ प्रयोग होनेवाला (नया-पुराना) विपरीतार्थक शब्द-युग्म है। आप अब इसकी परिभाषा समझें- जो कुछ ही समय पहले अस्तित्व मे आया हो, वह नया है। जैसे- उसने नया घर ख़रीदा है। इस नया शब्द के रूप-प्रयोग को लेकर हमारे विद्यार्थियों और सामान्य जन की कठिनाई अब भी देखी जा सकती है। उदाहरण के लिए- नया से नयी और नये की रचना होती है, जबकि बड़ी संख्या में नई और नए के प्रयोगकर्त्ता हैं, जोकि ग़लत है। आप नया का एक और उदाहरण देखें- मेरे घर के आस-पास अनेक नये घर निर्मित हो चुके हैं। मूल शब्द नया है। इस नया शब्द के अन्त मे या है, इसलिए या का अस्तित्व समाप्त नहीं होगा; न के साथ यी और ये का ही प्रयोग होगा, तभी व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध माना जायेगा; क्योंकि ये सारे शब्द स्वरयुक्त हैं। उदाहरण के लिए- नया संसार; नयी दुनिया। इसी नया शब्द से नवीनता/नूतनत्व/नया होने के भाव के अर्थ मे संज्ञा एवं पुंल्लिंग-शब्द नयापन की रचना होती है। इस विशेषण-शब्द नया मे पन नामक हिन्दी का प्रत्यय जुड़ा हुआ है।

1 जनवरी को ही क्यों मनाया जाता है न्यू ईयर? यहां जानें रोचक बात...

पुराना साल 2024 अलविदा कह रहा है और नए साल 2025 का आगाज होने वाला है। गौरतलब है कि हर साल 1 जनवरी के दिन को दुनिया भर में नए साल के तौर पर सेलिब्रेट किया जाता है। अलग-अलग देशों के लोग अपने-अपने अंदाज में न्यू ईयर का स्वागत करते हैं और जमकर जश्न मनाते हैं। अब, ये बातें तो आप सभी जानते होंगे लेकिन क्या कभी आपने सोचा है कि आखिर ये जश्न 1 जनवरी को ही क्यों मनाया जाता है या क्यों लोग 1 जनवरी को न्यू ईयर सेलिब्रेट करते हैं? अगर नहीं, तो यहां हम आपको इसी सवाल का जवाब देने वाले हैं।

दरअसल, पहले रोमन कैलेंडर मार्च महीने में शुरू होता था। मार्च का नाम मार्स ग्रह पर रखा गया है और इसमें सिर्फ 10 महीने होते थे, साथ ही 8 दिन का एक हफ्ता होता था।

इसके बाद 46 ईसा पूर्व में जूलियस सीज़र के सत्ता में आने के बाद कैलेंडर में सुधार करने का प्रयास किया। इसके लिए उन्होंने अलेक्जेंड्रियन खगोलशास्त्री सोसिजेनस की सलाह ली। इस दौरान पता चला कि धरती 365 दिन और छह घंटे में सूर्य की परिक्रमा करती है। इसको देखते हुए जूलियन कैलेंडर में साल में 365 दिन कर दिए और 1 जनवरी से नए साल की शुरुआत की।

शुरुआत के रोमन देवता जानूस को सम्मानित करने के लिए 1 तारीख को चुना गया था। माना ये भी जाता है कि 4000 साल पहले प्राचीन बेबीलोनियन सभ्यता के दौरान नया साल 11 दिन तक सेलिब्रेट किया जाता था। इस सेलिब्रेशन को अकितू कहा जाता था।

इससे अलग बता दें कि कोई भी कलैंडर सूर्य चक्र और चंद्र चक्र की गणना पर आधारित होता है। चंद्र चक्र पर आधारित कैलेंडर में 354 दिन होते हैं जबकि जो कैलेंडर सूर्य चक्र पर आधारित होते हैं उसमें 365 दिन होते हैं। ग्रिगोरियन कैलेंडर सूर्य चक्र पर आधारित है जिसे ज्यादातर देशों में इस्तेमाल किया जाता है।

विश्व बंधुत्व की भावना से ही बनेगा वैश्विक परिवार...

रमेश सर्राफ धमोरा

वैश्विक परिवार दिवस (1 जनवरी) पर विशेष

महात्मा गांधी के पसंदीदा भजन- वैष्णव जन तो तेने कहिये जे पीड़ परायी जाणे रे अर्थात दूसरों की पीड़ा समझने वाला ईश्वर के समान होता है- इसे भारत सही अर्थों में चरितार्थ कर रहा है। भारत हमेशा से विश्व बंधुत्व की भावना के सिद्धांत को अपनाकर उसी मार्ग पर चलाता आ रहा है। भारत दुनिया का एकमात्र ऐसा देश है जो हमेशा से सभी को साथ लेकर चलने का प्रयास करता रहा है।

दुनिया के किसी भी देश में कैसा भी संकट आया हो भारत उसके साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा नजर आता है। इसी को कहते हैं विश्व बंधुत्व की भावना। वैश्विक परिवार दिवस यदि दुनिया का कोई देश सही मायने में मनाता है तो वह भारत ही हैं। भारत में आज भी अतिथि देवो भव की भावना जिंदा है। यहां के लोग स्वयं भूखे रहकर अतिथियों को भोजन करवाना अपना परम धर्म समझते रहे हैं। वैश्विक परिवार का अर्थ है वसुधैव कुटुम्बकम इसका मूल सिद्धांत यह है कि संपूर्ण मानवता एक परिवार है। इस विचारधारा के अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह किसी भी राष्ट्र, जाति, या धर्म से हो, एक ही व्यापक परिवार का हिस्सा है। इस सिद्धांत के अनुसार, विश्व में सभी का समान महत्व है और हर किसी को समान सम्मान मिलना चाहिए।

दुनिया भर में लोग नए साल की पहली सुबह का आनंद उठाते हैं। लोग अपने दोस्तों, परिवार और करीबी लोगों के इस खास दिन का जश्न मनाते हैं। नए साल के साथ ही साल के पहले दिन यानी एक जनवरी को वैश्विक परिवार दिवस भी मनाया जाता है। हर साल एक जनवरी को मनाए जाने वाले इस दिवस के जरिए परिवारों के माध्यम से राष्ट्रों और संस्कृतियों में एकता, समुदाय और भाईचारे की भावना पैदा करता है। दुनिया में शांति बनाए रखने के लिए जरूरी है कि एक परिवार का निर्माण हो। ताकि विश्व में शांति की स्थापना होने के साथ ही हिंसा भी कम की जा सकें।

जब पूरी दुनिया नए साल का जश्न मनाती है। उसी दिन पूरे विश्व में वैश्विक परिवार दिवस मनाया जाता है। ताकि विश्व में रहने वाले सभी लोग एक परिवार की तरह रहें। इस तरह विश्व के सभी राष्ट्रों और समुदाय में भाईचारे की भावना पैदा हो सके। वैश्विक परिवार दिवस जिसे विश्व शांति दिवस के रूप में भी जाना जाता है। दुनिया में सद्भाव और एकता की अवधारणा को बढ़ावा देने के लिए हर साल मनाया जाता है। यह दुनिया के एक वैश्विक गांव के विचार पर जोर देता है। जिसमें नागरिकता, सीमा या नस्ल की परवाह किए बिना हम सभी एक परिवार हैं। एक खुशहाल परिवार वह परिवार नहीं है जिसमें हर कोई एक दूसरे के जैसा सोचता, काम करता, महसूस करता या व्यवहार करता हो। एक खुशहाल परिवार की एक पहचान यह है कि पूरा परिवार एक दूसरे को वैसे ही स्वीकार करता हैं।

यह दिन पूरे विश्व को एक परिवार मानता है। वैश्विक परिवार दिवस को शांति और साझाकरण के वैश्विक दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन का उद्देश्य बहुसंस्कृतिवाद, बहुलवाद को बढ़ावा देना और शांति और सद्भाव के साथ एक-दूसरे के साथ रहना सिखाना है। यह दिन विश्व के एक वैश्विक परिवार होने के विचार को बढ़ावा देता है। इसका उद्देश्य एकजुट होना और इस विचार को बढ़ावा देकर शांति का संदेश फैलाना है कि पृथ्वी एक वैश्विक परिवार है। ताकि दुनिया को सभी के लिए रहने के लिए एक बेहतर जगह बनाया जा सके।

वैश्विक परिवार दिवस की उत्पत्ति दो पुस्तकों में हुई थी। पहली 1996 में अमेरिकी लेखकों स्टीव डायमंड और रॉबर्ट एलन सिल्वरस्टीन द्वारा लिखित वन डे इन पीस 1 जनवरी 2000 नामक बच्चों की किताब थी। वहीं दूसरी किताब अमेरिकी शांति कार्यकर्ता और लेखक लिंडा ग्रोवर का 1998 का यूटोपियन उपन्यास ट्री आइलैंडरू ए नॉवेल फॉर द न्यू मिलेनियम थी। विशेष रूप से ग्रोवर ने 1 जनवरी को शांति के वैश्विक दिवस के रूप में स्थापित करने काफी अहम भूमिका निभाई थी। इन किताबों के विचारों के आधार पर ही 1997 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 1 जनवरी को शांति का एक दिन मनाने की घोषणा की।